वास्तु शास्त्र का उद्देश्य एवं निर्मित भवन में वास्तु समाधान

सुखं धनानि बुद्धिश्च संततिः सर्वदा नृणाम् ।
प्रियान्येषां च संसिद्धिः सर्व स्यात् शुभ लक्षणम् ।।

डा. सुनील त्रिपाठी

वास्तु के अनुसार निर्मित भवन में सुख–समृद्धि, सद्बुद्धि एवं सन्तति की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है एवं कृतज्ञता के ऋण से मुक्ति मिलती है और सर्वत्र शुभ लक्षण विराजमान रहते हैं।

सौरमण्डल के खगोलीय पिंडों में सर्वाधिक प्रभावशाली पिण्ड पृथ्वी और सूर्य हैं। वेदों का आधार सूर्य है। ऋग्वेद में सूर्य की व्याख्या करते हुए कहा गया है–

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमही ।
धियो यो नः प्रचोदयात ।।

हमारे प्राचीन मनीषी सूर्य की उपासना को प्रमुखता देते थे, हमारी ही नहीं विश्व की विभिन्न सभ्यतायें भी सूर्य की उपासना में विश्वास रखती हैं। सूर्य की प्रातःकालीन किरणें अत्यन्त प्रभावशाली और लाभदायक होती हैं, ऐसे में यदि भवन का निर्माण ऐसा हो कि उसके दरवाजे और खिड़कियाँ सूर्य की दिशा में हो तो यह भवन में निवास करने वालों के लिए लाभप्रद होता है, ऐसा वैज्ञानिकों का भी मत है। वास्तु शास्त्र में इसे एक दैवी सिद्धान्त की तरह मानते हुए – अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी के गुणों के अनुसार, गृह निर्माण करने पर बल दिया गया है।

भारत में भवन निर्माण एकमात्र सामान्य कार्य ही नहीं अपितु एक पवित्र धार्मिक संस्कार एवं जीवंत तत्व माना जाता है।

हमारे प्राचीन वेद व पुराणों के अनुसार सभी भवनों के भूखंड में वास्तु पुरुष अधोमुख है, और वास्तु पुरुष के अंगों पर बहुत सारे देवी–देवताओं का स्थाई वास है। वास्तु पुरुष के अंगों को ध्यान में रखते हुए, उनपर बसे समस्त देवी–देवताओं को उनकी प्रकृति के अनुसार व्यवहार कर उन्हें प्रसन्न रखना और उनसे वांछित फल प्राप्त करने की विधि ही मुलतः वास्तु शास्त्र है। इन्हीं की प्रकृति के अनुसार भवन का निर्माण करना चाहिए। जैसा कि हम सभी मानते हैं कि ईश्वर की इच्छा के बिना एक सूक्ष्म प्राणी भी अपना स्थान परिवर्तित नहीं करता है और उसी भगवान शिव का एक अंश हमारे घर में अनेक देवों को साथ लेकर वास्तु पुरुष के रूप में समाया हुआ है। अपने गृह में आसन्न इन सभी अलौकिक शक्तियों को उनकी प्रकृति सम्मत् व्यवहार कर ईश्वरीय शुभ फलों का पर्याप्त लाभ उठाना ही वास्तु शास्त्र का उद्देश्य है।

निर्मित भवन में वास्तु समाधान

भारतीय शास्त्रों एवं ज्योतिष के अनुसार निर्मित भवन में वास्तु सुधार हेतु अत्यधिक तोड़–फोड़ करने से वास्तु भंग का दोष लगता है, अतः इससे यथासम्भव बचना चाहिए, अगर बहुत ही आवश्यक हो तो आंशिक बदलाव किया जा सकता है।

अगर भवन निर्माण वास्तु के अनुरूप नहीं हुआ हो तो उसे ठीक करने के बहुत सारे दूसरे उपाय जैसे– मकान में विभिन्न दिशाओं के स्वामी एवं दिग्पाल के अनुसार रंगों का चुनाव तथा मकान में जल निकासी एवं प्लव (ढाल) की व्यवस्था वास्तु अनुसार करना चाहिए।

मकान के दोषानुसार शुभ चिन्ह : जैसे ऊँ, स्वस्तिक तथा विभिन्न प्रकार के पिरामिड इत्यादि का सही जगह पर ठीक से प्रयोग कर वास्तु दोष को कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त घर में उपलब्ध सभी बड़े–छोटे सामानों को वास्तु पुरुष के अंगों एवं घर में विराजमान सभी देवी–देवताओं तथा पंचतत्व (अग्नि, वायु, जल, आकाश एवं पृथ्वी) की दिशा के अनुरूप स्थापित कर सभी ईश्वरीय शुभ फलों का लाभ उठाया जा सकता है।

काशी वास्तु परामर्श, कमच्छा,
वाराणसी।
मो0– 9336917040,
9454917040
E-mail : kashivaastu@gmail.com